हरिशंकर परसाई एवं आर.के.नारायण के कथा–साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन

HARISHANKAR PARASAI EVAM R.K. NARAYAN KE KATHA SAHITYA ME ABHIVYAKT VYANGYA KA TULANATMAK ADHYAYAN

मंगलूरु विश्वविद्यानिलय

की पीएच .डी.(हिन्दी)उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की संक्षेपिका

FINAL SYNOPSIS

SUBMITTED TO

MANGALORE UNIVERSITY FOR THE AWARD OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

शोधनिर्देशक

डॉ.श्रीधर हेगडे

विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक
फ़ील्ड मार्षल के.एम.कार्यप्पा कॉलेज, मडिकेरी
(मंगळूरु विश्वविद्यालय की इकाई)
मडिकेरी–571201

शोधार्थी

श्रीमती संध्या यु.सिर्सीकर

अनुक्रमांक:166302708
अध्यापिका , हिन्दी विभाग
संत अलोशियस महाविद्यालय (स्वायत्त)
मंगळूरु-575003

Research Guide

Dr Shridhar Hegde
Head, Department of Hindi
Field Marshal K.M Cariappa College
(A Constituent College of Mangalore University)
Madikeri-571201

Researcher

Ms. Sandhya U. Sirsikar
Reg.No.166302708
Lecture,Hindi Department
St Aloysius College (Autonomous)
Mangalore -575003

हरिशंकर परसाई एवं आर.के.नारायण के कथा–साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन

HARISHANKAR PARASAI EVAM R.K. NARAYAN KE KATHA-SAHITYA ME ABHIVYAKT VYANGYA KA TULANATMAK ADHYAYAN

प्रस्तावना :

यह सनातन सत्य है कि सृष्टी के सभी प्राणियों में मानव परमात्मा का श्रेष्टतम सृजन है । वैसे ही साहित्य मनुष्य का सर्वोत्तम सृजन है । मानव जीवन व सभ्यता के विषय में साहित्य का जितना योगदान रहा है उतना ही शायद किसी तत्व का रहा हो । साहित्य को समाज का दर्पण मानागया है। साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत व्यापक और गहरा रहा है । साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समाज के हर प्रकार के हलचल को प्रस्तुत किया है । इससे हम यह कह सकते है कि जो समाज की 'करनी' है वही साहित्य की 'कथनी' बन जाती है । किसी ने खूब कहा है कि–

" अंधकार वहाँ है जहाँ आदित्य नहीं है, मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है ।"

वर्तमान समय की बात करे तो पद्य की तुलना में गद्य साहित्य की लोकप्रियता विशेष है । आधुनिक काल अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण रहा है । 'व्यंग्य' आधुनिक साहित्य की देन है। व्यंग्य साहित्य आधुनिक चेतना का परिणाम है । भारतीय साहित्य में व्यंग्य की परंपरा नई नहीं है । यह संदेह नहीं है कि 'व्यंग्य' विधा को 'विधा' का स्थान देनेवाले यशस्वी भारतीय साहित्यकार पंडित हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण है । इन दोनो दिग्गज साहित्यकारों ने विंसगतियों की पडताल की और वास्तविकता को समाज के सामने प्रस्तुत किया । परसाई और आर.के.नारायण स्वतंत्रोत्तर भारत के सबसे सशक्त व्यंग्यकार रह चुके है प्रस्तुत शोध प्रबंध में हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण के कथा साहित्य में व्यक्त व्यंग्य कातुलनात्मक अध्ययन का विनम्र प्रयास हुआ है ।

शोध की आवश्यकता एवं_शोध का उद्देश्य :

साहित्य से हम तामसिक शक्तियों का सामना कर सकते हैं । राष्ट्रीय एकता भी स्थापित कर सकते हैं । साहित्य में भूतकाल की गूँज और वर्तमान का प्रतिबिंब और भविष्य के निर्माण करने की शक्ति होती हैं। इस से मानवीय उदार दृष्टिकोण तेजोमय हो जायेगा । साहित्य से

हम जिस दुनिया में जी रहे हैं उसे अच्छी तरह से परामर्श कर सकते है । अपने आप को पहचान सकते है । आधुनिक काल में मनुष्य़ का जीवन एक महत्वपूर्ण मोड ले चुकी है । आज मनुष्य हर एक में व्यंग्य ढूँड रहा है, खुद को खुश रखने के लिये ज़रिया खोज रहा है। मेरा मनना है कि व्यंग्य साहित्य से बढ कर और कोई विधा नहींहो सकती है । इसलिए मनुष्य आज व्यंग्य साहित्य की ओर आकृष्ट हो रहा है।

आज सामाजिक वर्ग भेद, शोषकों का अत्याचार ,शोषितों की पीडा, दलितों पर होने वाला अन्याय ,धार्मिक संकीर्णता आदी ने ज़ोर पकड लिया है । आधुनिक युग के साहित्यकारों ने व्यंग्य के समस्त उपकरणों का प्रयोग कर इन विषयों पर व्यंग्य किया है । इनमें हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण प्रमुख थे । जब यह लिख रहे थे तब लोगों की नज़र इन पर पडी, इन्होंने अपने कथा–साहित्य में समाज पर जमकर खिल्ली उडाई है और आलोचकों की नज़र में विवादित भी रहे । यह शोध प्रबंध इस न्युनता पूर्ती की विनम्र कोशिश है । हरिशंकर परसाई एवं आर.के.नारायण के कथा–साहित्यक में अभिव्यक्त व्यंग्य की तुलनात्मक अध्ययन द्वारा व्यंग्य के विविध आयामों को दिखाना ही हिन्दी अनुसंधान के लिये चुनौतीदायी बात है, परिमाणत: इन व्यंग्य लेखकों के कथा–साहित्य के विषय में तुलनात्मक अध्ययन करना मेरे शोध –प्रबंध का प्रधान विषय और उद्देश्य रहा है । हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण के कथा साहित्य को देखा जाए तो इन दोनो ने अपने साहित्य में ‘व्यंग्य’ के हर पहलुओं को चित्रित किया है । इनके व्यक्तित्व और कृतित्व का विस्तृत अध्ययन करने के बाद यह समझ में आता है कि वे सीधे–साधे जीवन बितानेवाले अनेक कष्ट को झेलकर आज उन्नत स्थिति पर रहनेवाले महान दिग्गज साहित्यकारों में से गिने जाते हैं । बचपन से ही मुझे अध्ययन एवं उच्च शिक्षा के प्रति रूचि थी । जैसे–जैसे मैंने अध्ययन कार्य को आगे बढाया यह रूचि दिन प्रतिदिन बढती गयी । ‘व्यंग्य साहित्य’ मेरा अभिरूची दायक विषय रहा है, तो मैंने इस विषय पर शोधकार्य करने की ओर ध्यान बढाया तथा बचपन से लेकर आज तक मुझे व्यंग्य साहिति्य की रचनाओंने प्रभावित किया है। हिन्दी के हरिशंकर परसई और अंग्रेजी के आर.के.नारायण के व्यंग्य रचनाओने तो भारतीय साहित्य में चार–चाँद लगादिये हैं। इन लेखकों की कथा–साहित्य में व्यंग्य की विधाओं ने तो समाज पर सादगी से तीखा प्रहार किया हैं । आज तक किसी ने भी शोध–क्षेत्र में हरिशंकर परसाई एवं आर.के. नारायण के व्यंग्य कथा–साहित्य पर तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया है । इसीलिए मैने इन दो महान साहित्यिक दिग्गजों के कथा–साहित्य को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया है ।

मेरा सौभाग्य है कि जब मंगलूरु विश्वविद्यालय द्वारा पी.एच.डी की अधिसूचना प्रकट हुई तो आवेदन के दौरान **डॉ.श्रीधर हेगडे जी के मार्गदर्शन में शोध कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ । डॉ.श्रीधर हेगडे जी के स्नेहपूर्ण व्यवहार ,सलाह–मशवरा के उपरांत** ही **'हरिशंकर परसाई एवं आर.के.नारायण के कथा–साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन'** शीर्षक पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया । मेरे इस शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य दोनो व्यंग्यकारों के व्यंग्य कथा साहित्य का सूक्ष्म पर्यवेक्षण कर उसकी तुलना द्वारा मेरे विचारों को लोगो तक पहुँचाना ही है । हर आडंबरसहित बात को बेबाकी और खरेपन को शोध में रखकर समाज को सचेत करना ही है । हरिशंकर परसाई एवं आर.के.नारायण के कथा साहित्य में जो कथ्य व्यक्त हुआ है उसे किसी एसे निश्चित कटघरों में बांधा नहीं जा सकता है। यह दोनों साहित्यकार अपने साहित्य में व्यापक विषय पर बात करते नज़र आते हैं । उनकी कहानियों को पढकर मेरे मन में अनेक विचार तथा प्रश्न उभरे साथ ही उन प्रश्नों का समाधान प्राप्त करने में सहायता भी प्राप्त हुई । यह शोध प्रबंध इस न्युनता पूर्ती की विनम्र कोशिश है । इस अभाव की पूर्ती कर हिन्दी अनुसंधान क्षेत्र में योगदान देना इस शोध प्रबंध क मूल उद्देश्य है । इस तुलनात्मक शोध के माध्यम से यही स्पष्ट करने का प्रयास कर रही हूँ कि किस प्रकार भाषा भिन्न होने पर भी विषय एवं अनुभूतियाँ किस प्रकार एक समान ही होती हैं । साथ ही अभिव्यक्ति की भाषा एवं विषयों में भी किस प्रकार समानता आ जाती हैं ।

आर.के.नारायण और परसाई ने सिद्ध कर दिया कि किस प्रकार सभ्य,शिष्ट एवं संयत रूप से व्यंग्य साहित्य सामाजिक,राजनीतिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं पर व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया कर सकते हैं । कैसे भाषाओं की बहुरंगी छटा से व्यंग्य को तीखा बनाया जा सकता है इसका सटीक उदाहरण दोनों ही व्यंग्यकारों के साहित्य में परिलक्षित होती है । ऐसे में इन व्यंग्यकारों द्वारा किए गए इन सकारात्मक प्रयासों के बारे में न केवल स्वयं जानना ही नहीं अपितु शोध कार्य के माध्यम से उसकी पड़ताल कर आनेवाली पीढ़ी को सचेत करना ही इस शोध का प्रमुख उद्देश्य रहा है । इस शोध प्रबंध ने मेरे अंदर एक नयी सोच , एक नए विचार को जगाया। मेरी यह शोध कार्य यदी शोध की दिशा में नयी कडियाँ जोड सका तो मैं खुद को धन्य समझुंगी ।

शोध कर्य की पद्दतियाँ :

मानव के मन में सदैव तर्कशील और विवेक संगत होने के कारण मानव का स्वभाव नये-नये तथ्यों को खोजने का रहा है । इन अन्वेशणों का मुख्य कारण मानव के जीवन को अधिक सुखद ,सुंदर,उदात्त,विराट बनाना रहा है । अन्वेषण की जन्मजात प्रवृत्ति के कारण ही आदिम युग से वर्तमान युग तक की यात्रा पूर्ण हो पायी है । मनुष्य निरंतर विकास के सोपान को पाके यहा तक पहुँचा है । इसी अन्वेषण प्रक्रिया को अनुसंधान कहा जाता है । जिसकी अनेक पधतियाँ हैं जैसे –

1. अनुसंधान पद्धति

2. विश्लेषणात्मक पद्धति

3. तुलनात्मक पद्धति

4. वर्णनात्मक पद्धति

5. भाषावैज्ञानिक पद्धति

1. अनुसंधान पद्धति :

व्यंग्य का अस्तित्व आदिकाल से लेकर वर्तमान समय तक देखा जाता है । इस प्रकार इन महान व्यंग्यकारों के वजह से 'व्यग्य' की धारा साहित्य की विभिन्न विधाओं में बहती हुई चली आई और भविष्य में भी 'व्यंग्य' साहित्यिक दुनिया में अडी रही । व्यंग्य लेखन के मामले में परसाई और आर.के. नारायण एक ही सिक्के के दो पहलुओं के समान जान पड़ते हैं । दोनों समान रूप से साहित्य द्वारा समाज पर करारा चोट की है ।

परसाई तथा आर.के. नारायण के रचना संसार की विशाल और विविध राहों से गुज़रकर तथा उनके अनुभव सागर की गहराईयों में जाकर हम कुछ निष्कर्षों पर सहज ही पहुँच जाते हैं । हरिशंकर परसाई के साहित्य रूपी विशाल और गहरे सागर का मंथन करके मोतियों को निकालना सरल कार्य नहीं है । भारत के कई कहानीकार देश की कुंठाओं, मध्यवर्गीय मोहभंगों, संत्रास आदि में रमण करते थे इनमें से आर.के. नारायण भी एक है । मेरे इस शोध प्रबंध में अनुसंधान पद्दती का प्रयोग कर इनके व्यंग्य पर शोध कार्य किया गया है ।

2. विश्लेषणात्मक पद्धति :

व्यंग्य विधा में ऐसा जादू है कि 'व्यंग्य' निराश और हतोत्साहित समाज के लिए आशा का संदेश लेकर आता हैं और उसे परिस्थिति से लोहा लेने के लिए प्रतिबद्ध कराता है। अंग्रेज़ी साहित्य में व्यंग्य का प्रवाह सर्वत्र दिखाई देता है। व्यंग्य मानवीय दुर्बलताओं पर एक करारा चोट है। व्यंग्य वह है, जहाँ कहने वाला, होंटों पर हँसी, सुनने वाला तिलमिला उठता और फिर कहनेवाले को जवाब देना खुद को और भी उपहासास्पद बना लेना हो जाता है। व्यंग्य स्वर में विनोद नहीं, कमर्ष है, वेदना है, हल्कापन नहीं गंभीरता है। प्रस्तुत शोध कार्य में हरिशंकर परसाई और आर के नारायण के समग्र व्यंग्य साहित्य का अध्ययन करते हुए उनके व्यंग्य कथा साहित्य का विश्लेषणा करने के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करके शोध कार्य किया गया है।

3. तुलनात्मक पद्धति :

आर.के.नारायण और हरिशंकर परसाई - इन दोनों के कथा साहित्य में अलग-अलग किसम के व्यंग्य मिलते हैं। राजनैतिक, धर्म, समाज आदि क्षेत्र में व्यंग्य के सहारे ऐसे तीखा प्रहार किया है कि पढनेवाला पाठक अपने चेहरे पर एक व्यंग्य हँसी लाके सोचने में मजबूर होता है। आर. के. नारायण का मानना है कि "हास्य की भावना किसी को इस दुनिया में उचित स्थान देती है, और उसे अनुपात में चीज़ों को देखना सिखाती है। व्यंग्य सार्वभौमिक है। वह स्थिति और चरित्र को हास्य के उच्च रूपों को प्रतिनिधित्व करता है। आर.के.नारायण ने ऐसी साहित्य की सृजन की है जिसमें व्यंग्य, परिस्थिति या पात्रों से उत्पन्न होता है। उन्होंने अपने कच्चे माल को अपने आस-पास के घटनाओं से लिया है उनकी अंग्रेज़ी में साहित्य में भारतीय लेखन की सभी विधाओं को दर्शाती है और साथ ही यह स्पष्ट करता है कि वे एक अच्छे व्यंग्यकार भी हैं। उनके हर एक रचित कथा साहित्य मिथक और प्रतीकों पर आधारित है। इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रख कर मैंने अपने षष्टम अध्याय में उभय व्यंग्य साहित्यकारों का तुलनात्मक अध्ययन की समीक्षा प्रस्तुत किया है।

4. वर्णनात्मक पद्धति :

हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण के कथा साहित्य का महत्व इसलिये बरकरार रहा है क्युंकि उनकी रचना जनकला से जुडा हुआ है। उनमें छोटे-बडे हर इंसान की बात है। परसाई ने फेंटसी के माध्यम से वास्तविकता को दर्शाया है, और सभी विधाओं में पारंगत थे। चाहे वह उपन्यास हो, कहानी हो, कोई टिप्पणी या आलोचना हो, वे सभी में समान रूप से हिस्सेदारी रखते हैं। दोनों रचनाकारों ने अपनी हिन्दी अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग कर मानव मूल्यों के भीतर राजनीतिक घात और अंतर्विरोधों को बड़े रोचक और चुटीले ढंग से प्रस्तुत किया हैं। आर.के.नारायण आँचलिकता के प्रभावों को लिए हुए सामने आते हैं। मैंने अपने शोध कार्य में इन सभी अंशों को ध्यान में रख कर वर्णनात्मक पद्धति द्वारा व्यंग्य के परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया है।

5. भाषावैज्ञानिक पद्धति :

'व्यंग्य साहित्य' में केवल व्यंग्य ही नहीं होता, व्यंग्य की कटुता को दूर करने के लिए विनोद और हास्य की थोड़ी बहुत आवश्यकता रहती है। लेकिन इसका यह अर्थ भी नहीं है कि हास्य व्यंग्य को कुंठित कर दे। परसाई और आर.के.नारायण भाषा को अपने श्रेष्टतम हथियार के रूप में अपनाया है। भाषा विज्ञान,भाषा की संरचना और उसके स्वरूप का विश्लेषणात्मक विवरण ही विज्ञान है। जिसके साहित्य में प्रयुक्त भाषा आंतरिक अर्थों से भरा हुआ होता है। तब वह भाषा 'भाषा विज्ञानिक' अर्थ में बदल जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य में लेखक की साहित्यिक भाषा ,स्थानीय क्षेत्र की भाषा , बोली आदी का अध्ययन भाषा विज्ञानिक पद्धती के अनुसार किया गया है।

शोध विषय की सीमा एवं व्याप्ती :

मानव एक जिज्ञासु प्राणी है। वह अपने चारों तरफ दिन-प्रतिदिन घटने वाली घटनाओं के प्रति जागरूक रहता है और इन घटनाओं में सत्य को खोजने का प्रयत्न करता है। इन सभी को समझने तथा हल करने के लिए उसने समय-समय पर अनेक आविष्कार किए है। अध्ययन के अनेक विधियों को निर्माण करने के साथ-साथ मनुष्य इस निष्कर्ष पर पहुंचा चुका है कि शोध पद्धति के अतिरिक्त ज्ञान प्राप्ति, समस्याओं को समझने व

हल करने के लिए कोई सरल एवं छोटा रास्ता नहीं है । इसलिए अनुसंधान के प्रवृति का विश्लेषण करने के लिए शोध पद्धति को समझना आवश्यक है। इस ज्ञान को व्यवस्थापूर्वक सिद्द करने के लिए शोध कार्य किया जाता है । जिसका कोई सीमा एवं व्याप्ती नहीं होता ।

व्यंग्य वह है, जहाँ कहने वाला, होंटों पर हँसी, सुनने वाला तिलमिला उठा और फिर कहनेवाले को जवाब देना खुद को और भी उपहासास्पद बन लेना हो जाता हो । व्यंग्य स्वर में विनोद नहीं, कमर्ष है, वेदना है, हल्कापन नहीं गंभीरता है । व्यंग्य की विशालता को ध्यान में रखते हुए मनुष्य की घृणा को पुष्टि दी गई है । 'व्यंग्य' जात-पात, देश-काल, भेद-भाव, अमीर-गरीब से परे होता है । अध्ययन करते वक्त मेझे यह ज्ञात हुआ कि जैसे-जैसे समाज बदलता है वैसे-वैसे व्यंग्य की विषय-वस्तुएँ भी बदलती गयी । कथन का सत्य यह है कि, व्यंग्य साधन से विधा होकर एक सशक्त भावाभिव्यक्ति है । बड़े-बड़े विद्वान, विदुषी, मंत्री, नेता, प्रशासक, आदर्श गुरु, प्रधानाचार्य के कथनी-करनी में जितनी अधिक गहराई होती है उतना ही तीक्ष्ण व्यंग्य का उगम होता है । हम कह सकते हैं कि परसाई और आर. के. नारायण द्वारा लिखित रचनाएँ आकार में छोटी हैं जो अपनी ही मान्यताएँ और मर्यादाएँ लेकर आगे बढ़ती हैं । कथ्यपक्ष का गांभीर्य, आशय की नूतनता, विसंगतियों पर आक्रोश, बेहतर राजनीति, समाज और धर्म की आकांक्षा आदि सभी गुणों ने इस कहानियों को समय की अभिव्यक्ति का सच्चा स्वरूप बना दिया है ।

परसाई की कथा साहित्य शिल्प के लिए मशहूर नहीं है पर कथ्य के अनुकूल शिल्प को वे खोज लेते हैं । आर.के.नारायण के कथा साहित्य की कौशलता में इतिहास, पुराण, ज्ञान, लोकसाहित्य की जानकारी, फैंटसी का चित्रण आदि का बोध होता हैं। उनका कथा साहित्य व्यंग्य के पहनावे में विकृत्तियों को तह तक ले जाकर सच्चाईयों को उद्घाटित करती हैं । परसाई की रचनाओं को पढ़कर महसूस होता है कि हमारा समाज, जिसे आज हम क्रूर और उन्मादी का विशेषण देते हैं वह शायद पैदा ही इन विशेषणों के साथ हुआ था । यह सब देखते हुए ज्ञात होता है कि शायद 'व्यंग्य' ही एक मात्र समीक्षात्मक विधा है जो जीवन में प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराती है । इन कथा साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य का अध्ययन करना ही इस शोध की सीमा

एवं व्याप्ती है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में यह दिखाने का प्रयास किया है कि हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण बे-दाग समाज निर्वाह करने में कितने सफल रहे हैं, व्यंग्य की सुदृढ़ परंपरा में दोनों रचनाकारों की हिस्सेदारी कितनी है, हिन्दी व्यंग्य साहित्य तथा समकालीन रचनाकारों में वे अपनी रचनाधर्मिता में वे कितने मौलिक रहे हैं ? इन्हीं सवालों को 'हरिशंकर परसाई एवं आर.के.नारायण के कथा–साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन' के अंतर्गत समेटा गया है और उसी के अधार पर इसे छः अध्यायों में बाँटा गया हैं।

प्रथम अध्याय	:	**व्यंग्य का स्वरूप विवेचन**
द्वितीय अध्याय	:	**हिन्दी तथा अंग्रेजी व्यंग्य साहित्य का विकास**
तृतीय अध्याय	:	**हरिशंकर परसाई के चयनित व्यंग्य कथा-सहित्य का अनुशीलन**
चतुर्थ अध्याय	:	**आर.के.नारायण के चयनित व्यंग्य कथा-सहित्य का अनुशीलन**
पंचम अध्याय	:	**हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण के कथा साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन**
षष्ठ अध्याय	:	**उभय व्यंग्य साहित्यकारों के साहित्य में प्रयुक्त भाषा**

प्रथम अध्याय : व्यंग्य का स्वरूप विवेचन

प्रस्तुत अध्याय में 'व्यंग्य' शब्द की चर्चा करते हुए हास्य और व्यंग्य में अन्तर,पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों के मतानुसार व्यंग्य की परिभाषा,व्यंग्य के भेद तथा व्यंग्य का विषयगत भेद आदि का विवेचन किया गया है। व्यंग्य आरम्भ से बोलचाल की भाषा में तो रहा लेकिन साहित्य में इसका प्रवेश बहुत बाद में हुआ। साहित्य अपनी परिभाषा में ही सौम्य होता है। सबको साथ लेकर चलने की उसकी मंशा रहती है। सहित से 'साहित्य' बना है। लेकिन व्यंग्य सबको साथ लेकर नहीं चलता। वह समाज में व्याप्त विरोधाभासों की मज़ाक उडाता है। पाखण्ड पर चोट करता है। छल-प्रपंच और ऊपर से न दिखाई देने वाली विसंगतियों का परदाफाश करता है। दोगलेपन को धिक्कारता है। जिसका समग्र विवेचन इस अध्याय में है।

द्वितीय अध्याय : हिन्दी तथा अंग्रेजी व्यंग्य साहित्य का विकास

प्रस्तुत अध्याय में हिन्दी तथा अंग्रेजी व्यंग्य साहित्य का विकास जो स्वतंत्रविधा रूप में व्यंग्य के विकास से संबंधित है । इसमें व्यंग्य विधा के विकास के कारण, व्यंग्य एक स्वतंत्र विधा है या शैली? इस पर अलग-अलग विद्वानों के मतों की चर्चा की गई हैं। इसी में मैंने व्यंग्य के सापेक्ष विधा तथा, स्वतंत्र विधा की विकास यात्रा को देखाने का प्रयास किया है। अंत में व्यंग्य के विकास में योगदान देनेवाले तथा व्यंग्य को एक विधा का दर्जा देनेवाले प्रमुख व्यंग्यकारों का एवं उनकी व्यंग्य रचनाओं का परिचय विश्लेषण प्रस्तुत किया है । इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य में व्यंग्य लेखन का काम विशाल फलक पर हुआ है ।

तृतीय अध्याय : हरिशंकर परसाई के चयनित व्यंग्य कथा-सहित्य का अनुशीलन

प्रस्तुत अध्याय में हरिशंकर परसाई के चयनित व्यंग्य कथा-सहित्य का अनुशीलन । जिसमें 'भोलाराम का जीव','दो नाकवाले लोग','चूहा और मैं','भगत की गत','सदाचार का तावी','अपनी-अपनी बीमारी','गर्दिश के वो दिन','तट की खोज','ज्वाला और जल','ईमांदारों के सम्मेल' जैसे कत्य को चुनकर उसमें आए हुए व्यंग्य पक्ष को सामाजिक संदेश के सथ प्रस्तुत किय गया है । अधिकतर व्यंग्य साहित्य में मजबूरी में प्रवेश करता है । जब साहित्यकार समाज में व्याप्त विसंगतियों, विद्रूपों, पाखंड को सामाजिक दवाबों या राजनैतिक कारणों से, या कभी कभी अन्यायपूर्ण व्यवस्था का खुद भी जीविका उपार्जन के लिए एक अंग होने की वजह से, प्रत्यक्षत: नहीं रख पाता तो वह उन्हें व्यंग्य के माध्यम से साहित्य को समर्पित करता है।साहित्य में व्यंग्य वैचारिक स्वतंत्रता का द्योतक है । जब वैचारिक स्वतंत्रता नहीं होती, बड़े यत्न पूर्वक, साहित्यिकता की रक्षा करते हुए, साहित्यकार व्यंग्य परोसता है । जिसका वस्तु विश्लेशण इस अध्याय में किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय : आर.के.नारायण के चयनित व्यंग्य कथा-सहित्य का अनुशीलन

प्रस्तुत अध्याय में 'गोविंद सिंह की भेंट'(Gateman's Gift), 'सोने का कमरबंद'(The Gold Belt), 'मुनि' (A Horse and two Goats), 'नित्या'(Nithya), 'प्रति माह45/-

रुपये'(Forty five a month), 'महा कंजूस'(The Hoard), 'माय डेज़'(MyDays), अंग्रेजी शिक्षक (The English Teacher), 'मिठाईवाला'(The Vendor of Sweets), 'रामजी की लीला'(Carrer) रचनाओं में अभिव्यक्त व्यंग्य की विचारधारा तथा प्रगतिशील दृष्टि पर प्रकाश डाला गया है। व्यंग्य के साथ अक्सर "हास्य" और "विनोद" जुड़ा रहता है। हम व्यंग्य-विनोद और हास्य-व्यंग्य जैसे पदों का इस्तेमाल भी करते हैं। ये शब्द समूह स्पष्ट: घोषणा करते हैं कि व्यंग्य केवल व्यंग्य नहीं होता, व्यंग्य की कटुता को दूर करने के लिए विनोद और हास्य की थोड़ी बहुत आवश्यकता रहती है। इन सभी तथ्यों पर इस अध्याय में विचार किया गया है।

पंचम अध्याय : हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण के कथा साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय में हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण के कथा साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन। जिसमें नहरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण के व्यंग्य साहित्य का विविध आयामों पर विचार प्रकट किया गया है। इसमें परसाई और आर.के.नारायण के व्यंग्य के तेवर एवं उनकी रचना साक्ष्य है। उनके व्यंग्य के विविधरूप,जैसे राजनीति और प्रशासन, राजनैतिक व्यवस्था, धर्म, आर्थिक, सामाजिक परिदृश्य जैसे विविधरूपों की चर्चा की है।

षष्ठ अध्याय : उभय व्यंग्य साहित्यकारों के साहित्य में प्रयुक्त भाषा

प्रस्तुत अध्याय में हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य का कथ्य और शिल्पबक्ष। यहाँ परसाई के कथ्यपक्ष में उनकी विचारधारा, प्रगतिशील दृष्टि, यथार्थवादी दृष्टि, गंभीर जीवनबोध, मानववाद, व्यंग्य में करुणा, साहस और दृष्टि का खुलापन आदि विषयों को समेटा गया है। शिल्पपक्ष में परसाई और आर.के.नारायण की भाषा, भाषा के शब्दस्रोत, लोकोक्ति, मुहावरें,शैली आदि पर विचार किया गया है। अन्त में समग्र शोधप्रबंध का उपसंहार और सन्दर्भ ग्रंथ सूची प्रतुत किया गया है।

उपसंहार

इस शोध प्रबंध के अंत में उपसंहार लिखा गया है । इसमें लेखकों की व्यंग्य साहित्य की पूरी विरासत को समेटने की कोशीश हुँई है । परिशिष्ट में आधार ग्रंथ सुची, सहायक ग्रंथ सुची, शब्द कोश और पत्र–पत्रिकाओं का विवरण दिया गया है । 'व्यंग्य' आज साहित्य–सृजन का अभिन्न अंग माना जाता है । वह साहित्य की समस्त विधाओं पर छा गया है । अधुनिक भारतीय साहित्य के इतिहास में हिन्दी के हरिशंकर परसाई एवं अंग्रेजी के आर.के.नारयण एक ऐसा महत्वपूर्ण नाम है जिन्होंने भारतीय साहित्य में व्यंग्य का नया दौर आरंभ किया । इन दोनों ने साहित्य में व्यंग्य नामक विधा का सूत्रपात किया है । उन्होंने व्यंग्य को हास्य से अलग करके तीक्ष्ण हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है । कथ्य एवं शिल्प की दृष्टी से हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य में व्यंग्य को एक नई दिशा देने का पूरा क्षेय इन माहान व्यंग्य लेखकों को जाता है । इनके कथा–साहित्य में व्यंग्य द्वारा समाज पर तीखा प्रहार करने का अंदाज़ ही कुछ अलग है ।

उन्होंने भारतीय साहित्य में व्यंग्य के लिए एसा रास्ता बनाया था की जिन पर आज अनगिनत साहित्यकार चल रहे है । यह दोनों साहित्य्कार वट के समान है जिन्होंने दुनिया के साथ संघर्ष करते हुए काफ़ी कुछ दिया आज उसीका परिणाम है कि 'व्यंग्य साहित्य' को इतनी ऊँचाई प्राप्त हो सकी है । व्यंग्य के पूर्वजों ने ऐसी भूमि तैयार कर दी हैं कि जिसमें आने वाले समय में नई पीडी आसानी से व्यंग्य की फसल उगा सके। वर्तमान में व्यंग्य के लिए विषय, पात्र और वातावरण की कोई कमी नहीं है । आज व्यंग्य के लिए विशाल भूमि मौजूद है और विषय भी।

****

अनुक्रमणिका

हरिशंकर परसाई एवं आर.के.नारायण के कथा–साहित्य में अभिव्यक्त व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन

भूमिका

प्रथम अध्याय : व्यंग्य का स्वरूप विवेचन

1.0 विषय प्रवेश

1.1 व्यंग्य शब्द का अर्थ

1.1.1 भारतीय विद्वानों के मतानुसार व्यंग्य

1.1.2 पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार व्यंग्य

1.2 व्यंग्य की अवधारणा और परिभाषा

1.2.1 व्यंग्य की प्रक्रिया

1.2.2 व्यंग्य का उद्देश्य

1.2.3 व्यंग्य की परिभाषा

1.3 व्यंग्य के प्रकार

1.4 हास्य और व्यंग्य में अंतर

1.5 व्यंग्य के विषयगत भेद

1.5.1 वैयक्तिक या अत्मगत व्यंग्य

1.5.2 निर्वैयक्तिक व्यंग्य

1.5.2.1 सामाजिक व्यवस्था संबंधी व्यंग्य

1.5.2.2 राजनैतिक व्यवस्था संबंधी व्यंग्य

1.5.2.3 सरकारी कार्यालय व्यवस्था संबंधी व्यंग्य

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : हिन्दी तथा अंग्रेजी व्यंग्य साहित्य का विकास

2.0 विषय प्रवेश

2.1 व्यंग्य का मूलभूत प्रश्न

2.2 आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का विकास

2.2.1 स्वातंत्र्यपूर्व हिन्दी साहित्य में व्यंग्य

2.2.2 सवातंत्र्योत्तर व्यंग्य साहित्य का विकास

2.3 आधुनिक अंग्रेजी साहित्य में व्यंग्य का विकास

2.3.1 स्वातंत्र्यपूर्व अंग्रेजी साहित्य में व्यंग्य

2.3.2 सवातंत्र्योत्तर व्यंग्य साहित्य का विकास

2.4 व्यंग्य विधा-विकास के कारण

2.4.1 सापेक्ष विधा के रूप में व्यंग्य

2.4.2 स्वतंत्र विधा के रूप में व्यंग्य

2.5 व्यंग्य के विकास में योगदान देनेवाले प्रमुख व्यंग्यकार

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : हरिशंकर परसाई के चयनित व्यंग्य कथा-सहित्य का अनुशीलन

3.0 विषय प्रवेश

3.1 भोलाराम का जीव

3.2 दो नाकवाले लोग

3.3 चूहा और मैं

3.4 भगत की गत

3.5 सदाचार का तावीज

3.6 अपनी-अपनी बीमारी

3.7 गर्दिश के वो दिन

3.8 तट की खोज

3.9 ज्वाला और जल

3.10 ईमांदारों के सम्मेलन में
निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : आर.के.नारायण के चयनित व्यंग्य कथा-सहित्य का अनुशीलन

4.0 विषय प्रवेश

4.1 गोविंद सिंह् की भेंट (Gateman's Gift)

4.2 सोने का कमरबंद (The Gold Belt)

4.3 मुनि (A Horse and two Goats)

4.4 नित्या (Nithya)

4.5 45 /-रुपये (Fortyfive a month)

4.6 महा कंजूस (The Hoard)

4.7 माय डेज़ (My Days)

4.8 अंग्रेजी शिक्षक (The English Teacher)

4.9 मिठाईवाला (The Vendor of Sweets)

4.10 रामजी की लीला (Carrer)
निष्कर्ष

पंचम अध्याय : हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण के कथा साहित्य में

अभिव्यक्त व्यंग्य का तुलनात्मक अध्ययन

5.0 विषय प्रवेश

5.1 तुलनात्मक साहित्य आज की मांग

5.2 हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य का विविध आयाम

5.2.1 ठोस यथार्थ की पहचान

5.2.2 अनुभव संसार की व्यापकता

5.2.3 मानवतावादी परिप्रेक्ष्य

5.2.4 उपन्यासों में व्यंग्य

5.2.5 कहानियों में व्यंग्य

5.2.5.1 राजनैतिक व्यंग्य

5.2.5.2 सामाजिक पृष्ट्भूमी पर आधारित व्यंग्य

5..2.5.3 धर्म से संबंधित परसाई का व्यंग्य

5.3 आर.के.नारायण के व्यंग्य साहित्य का विविध आयाम

5.3.1 ठोस यथार्थ की पहचान

5.3.2 अनुभव संसार की व्यापकता

5.3.3 मानवतावादी परिप्रेक्ष्य

5.3.4 उपन्यासों में व्यंग्य

5.3.5 कहानियों में व्यंग्य

5.3.5.1 राजनैतिक व्यंग्य

5.3.5.2 सामाजिक पृष्टभूमी पर आधारित व्यंग्य

5.3.5.3 धर्म से संबंधित आर.के.नारायण का व्यंग्य

5.3.5.4 आर.के.नारायण का निबंध साहित्य

5.3.5.5 आर.के.नारायण संस्मरण लेखन

5.3.5.6 आर.के.नारायण की आत्म कथा

5.3.5.7 आर.के.नारायण के लघु नाटक

5.4 उभय व्यंग्य साहित्य की तुलना

निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय : उभय व्यंग्य साहित्यकारों के साहित्य में प्रयुक्त भाषा

6.0 विषय प्रवेश

6.1 परसाई और आर.के.नारायण की भाषा के शब्द स्त्रोत

6.1.1 अंग्रेजी श्ब्द

6.1.2 आर.के.नारायण की अनोखी भाषा

6.1.3 स्थानीय बोली

6.2 मुहावरे-लोकोक्ति

6.3 व्यंग्य शैली

6.3.1 परोडी शैली

6.3.2 डायरी शैली

6.3.3 संवाद शैली

6.4 फ़ैंटसी

निष्कर्ष

उपसंहार

परिशिष्ट १ : हरिशंकर परसाई और आर.के.नारायण के व्यक्तित्व और कृतित्व

परिशिष्ट २ : आधार ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

पत्र पत्रिकाएँ, इंटरनेट

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

क्र.सं.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष
1	परसाई रचनावली खंड १	हारिशंकर परसाई	1985 राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली
2	परसाई रचनावली खंड २	हारिशंकर परसाई	1985 राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली
3	परसाई रचनावली खंड ३	हारिशंकर परसाई	1985 राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली
4	परसाई रचनावली खंड ४	हारिशंकर परसाई	1985 राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली
5	परसाई रचनावली खंड ५	हारिशंकर परसाई	1985 राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली
6	परसाई रचनावली खंड ६	हारिशंकर परसाई	1985 राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली
7	" अपनी – अपनी बीमारी "	हारिशंकर परसाई	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 1993
8	" साहित्य समीक्षा और शोध "	अंजु मिश्रा	भारती भाषा प्रकाशन,दिल्ली, प्र.सं 1993
9	" श्रेष्ट व्यंग्य कथाएँ ",	उपेंद्रनाथ अश्क	पराग प्रकाशन, प्र.सं 1973
10	" शिकायत मुझे भी है "	हरिशंकर परसाई	राजकमल प्रकाशन, दिली, द्वितीय संस्करण,1967

सहायक ग्रंथ

1	"हरिशंकर परसाई व्यंग्य की वैचारिक पृष्टभूमी "	राधे मोहन शर्मा	भूमिका प्रकशन , नई दिल्ली , प्र.सं – 1992
2	"हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई"	मदालसा	विश्वविद्यालय प्रकाशन , वारणासी , प्र.सं. 1999
3	" भारतीय साहित्य के निर्माता हरिशंकर परसाई "	विश्वनाथ त्रिपाठी	साहित्य अकादामी . नई दिल्ली , प्र.सं. – 2007
4	" तुलनात्मक साहित्य "	इंद्रनाथ हौधरी	भारतीय परिप्रेक्षेय , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली 1977
5	" व्यंग्य क्या , व्यंग्य क्यों "	श्याम सुंदर घोष (स्म्पा)	साहित्य प्रकाशन , दिल्ली , प्रं.सं.–2008
6	" व्यंग्य के मूलभूत प्रश्न "	शेर जंग गर्ग	सामयिक प्रकाशन, दरियागंज , नई दिल्ली , प्रथम संस्करण – 1973
7	" तुम्हारा परासाई "	कांतिकुमार जैन	वाणी प्रकाशन नई दिल्ली , प्र.सं. – 2007

8	हिन्दी साहित्य का इतिहास	डो. माधव सोनटो	विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2000
9	“ और अन्त में ”	हरिशंकर परसाई	अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलहाबाद, प्र.सं 1993
10	“ तिरछी रेखाएँ ”	हरिशंकर परसाई	कापीराइट, प्र.स 1972
11	“ Malgudi Days ”	Heinemann	(London 1982) p.VIII
12	“ A study of the fiction of RK Narasyan ” (अर . के नरायण के उपन्यासों क अध्ययन – एम . के नाइक)	M.K Naik	Sterling publishers,New Delhi,Bangalore and Jalsnder 1983,
13	RK Narayan :” A Critical Appreciation ” (आर . के नारायण के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन – विलियम वाश)	William Walsh	A Critical Appreciation, New Delhi, Allied Publishers, 1983
14	“ The Regional Saga Behind R. K. Narayan Novels”	Joseph L, Blotner	Diss. Cardiff University, 2006.Cardiff: City Publishers, 2005
15	“The Magic Idyll of Antiquated India in R.K. Narayan Fiction” (आर .के नारायण के साहित्य में चित्रित प्राचीन भारत – दर्शना रानी	Darshana Rani	Research Scholar, NIMS University, Jaipur, Rajasthan, India , 2008
16	The Magic of Malgudi (आर .के नारायण – मालगुडी का जादु)	R.K Narayan	Penguin Book. 2000
18	“ The novel in modern India ” (अंग्रेजी उपन्यास में अधुनिक भारत)	Iqbal Bhakthiyar	Bombay:P.E.N All India Center,1964.print
19	“The Modern Short Story: A Critical Survey”(लघु कथावों का सर्वेक्षण)	Bates H.E	London:Michael Josph,1972.print

20	"The Representation of Region in the Novels of R.K Narayan and Pannalal Patel : A comparative study"(आर .के नारायण और पन्नालाल पटेल के उपन्यास में क्षेत्र का प्रतिनिधित्व)	Bhagavabhai H. Chaudhari	The M.S. University of Baroda , 2015 print
21	"Mysore / Malgudi : RK Narayan's World of South India"(आर .के नारायण के 'मलगुडी' में चित्रित दक्षिण भारत)	Nancy Shield Nancy Shield	The Missouri Review , 6 , 3 1983.
22	"The Ironic Vision a study of the Fiction of R.K Narayan"(आर .के नारायण के कथा साहित्य का विडंबनात्मक अध्ययन)	M.K Naik	New Delhhi /; sterling publishers Pvt. Ltd. , 1983
23	"RK Narayan's Novels : Acceptance of Life "(आर .के नारायण के उपन्यास में जीवन की स्वीकृती)	Venkatachar .K	, Indian Literature , Vol XIII, No.1. 1970
24	"The Short Stories of RK Narayan "(आर .के नारायण की लघु कथाअओं की शैली)	Walsh William	The Journal of Commonwealth Literature , No.5,1986
25	"Greatful to Life nd Death ", RK Narayan "(जीवन की सर्तकता–आर .के नारायण)	RK Narayan	Shalabh Prakashan , 1984.print.
26	"Themes in Indo-Anglian Literature"(भारतीय अंग्रेजी साहित्य में विषय प्रस्ताव)	Malwani, M.D	Barielly:Prakash BookDepot,1977
27	"Fiction and the reading public in India"(भारत में कथा और वाचन जनत)ा	Narasimhaiah C.D	Mysore University of Mysore , 1967

28	"Aspects of Indian Literature : The Changing Pattern"(भारतीय सहित्य के बदलते स्वरूप)	Suresh Kohli	New Delhi : Vikas Publication ,1975
29	"RK Narayan : A study in Transcendence"(आर .के नारायण के श्रेष्ट कहानियों का अद्ययन)	Mary Beatina	New York Peterlang Publications , 2008
30	"Indo-EnglishFiction"(प्रमुख इन्डों अंग्रेजी कथा साहित्य)	K.C Bhatnagar	Barelly:PrakashBook Depot.1980